# अगुवा –मार्गदर्शिका

## इस बाईबल अध्ययन का प्रयोग कैसे करें

यह बाईबल अध्ययन अगुओं के लिए सरल साधन है, जो अपने समूह को आकर्षक और संवादात्मक तरीके से बाईबल अध्ययन की अगुवाई करने में मार्गदर्शन करता है | इस अध्ययन की सरलता और गहराई हर उम्र और स्तर के बिश्वास करने वाले लोगों को व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, धर्मशास्त्र की खोज करने के लिए उत्साहित करता है .

यह अध्ययन सहभागियों के लिए धर्मशास्त्र का एक भाग, सामूहिक सभा और आने वाले सप्ताह की तयारी में स्वयं के प्रयोग के लिए मार्गदर्शन करता है |

सहभागी, दिए गए पद को प्रतिदिन पढ़ते हैं, समझने के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करते हैं, और प्रति दिन के प्रश्नों को पूरा करते हैं | प्रतिदिन, पवित्रात्मा धर्मशास्त्र के भाग की गहराई को प्रकट करता है और समझने में मदद करता है | सहभागी परमेश्वर के वचन को सक्रिय रूप से अध्ययन करते हैं | नीचे दिए गए बाईबल अध्ययन के सरल तरीकों से व्यक्तिगत खोज करते और परिवर्तनशील सच्चाई को व्यवहार में लाते हैं |

- **<u>अवलोकन</u>**
  वचन क्या कहता है ?
  मुख्य विचार क्या है ?
- **<u>अनुवाद</u>**
  वचन का अर्थ क्या है ?
  महत्वपूर्ण शब्द ,पद और सच्चाई क्या है ?
- **<u>प्रयोग</u>**
  पवित्रात्मा अपने जीवन में इस वचन का प्रयोग करने के लिए कैसे अगुवाई कर रहा है?

### <u>एक बाईबल अध्ययन समूह का आरम्भ कैसे करें</u>

हम विश्वास करते हैं और परमेश्वर की इच्छा है कि आप जो हैं, जंहा रहते हैं, काम करते हैं या जो सामाजिक व्यवस्था है, वंहा आपको अनन्त के लिए प्रभावित करने में इस्तेमाल करें | प्रारम्भ करने के लिए यंहा तीन सरल कदम हैं |

## 1.प्रार्थना

यह प्रार्थना और सम्बध के साथ आरंभ होता है

**प्रार्थना**

- उस मित्र के  लिए प्रार्थना करें जो आपको बाईबल अध्ययन समूह आरम्भ करने में सहायता करेगा |
- नियमित रूप से एक साथ प्रार्थना करें | परमेश्वर से उसकी योजना और मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करें |
- अपने क्षेत्र में चलते हुए प्रार्थना करें | परमेश्वर के आशीष और सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें |
- लोगों का नाम लेकर प्रार्थना करें | लोगों से मुलाकत ,उनकी देखभाल और उनकी सेवा का अवसर मिलने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें |देखभाल करने का काम लोगों के हृदय को खोलता है और सम्बंध को मजबूत बनाता है |
- उनके बाईबल अध्ययन में रूचि लेने के लिए प्रार्थना करें |

**संबंध:-**

- उन लोगों के साथ मिलें जो आपके नजदीक रहते,काम करते और समाज से जुड़े हैं | मित्र बने और उत्साहित करें |
- बातचीत करने का पहल करें - अच्छे प्रश्न पूछें और अच्छा सुनने वाला बनें |
- एक साथ कॉफ़ी,चाय या भोजन में समय बितायें |
- प्रेम प्रकट करने ,देने और सेवा करने का अवसर ढूंढें |

## 2. जुड़े रहना

.... रूचि रखने वालों को ढूंढें

**एकत्रित होने की योजना बनायें**

- तारीख ,समय और स्थान निश्चित करें
- आने के लिए इच्छुक लोगों की सूची बनायें
- प्रार्थना के साथ निमंत्रण दें |
- यदि आप चाहें तो नाश्ता का प्रबन्ध करें |
- बातचीत करने के लिए प्रश्नों की सूची या समूह से" परिचित" होने का कार्यक्रम रखें |

**समूह को अगुवाई करने का मार्गदर्शन**

- यदि इच्छा हो ,तो कॉफ़ी ,चाय और नाश्ता का इंतजाम करें |
- स्वागत करें ,अपना परिचय दें और एक दुसरे को जानें (प्रश्नों का प्रयोग या एक दुसरे के साथ आनंद उठाने का अवसर दें |

- समय की समाप्ति पर कुछ इस प्रकार कहें " हमने एक साथ बहुत अच्छा समय बिताये | मैं एक अच्छा वातावरण और एक देखभाल करने वाला समुदाय बनाना चाहता हूँ , जहाँ एक साथ बाईबल अध्ययन कर सकें और जो कहता है और हमसे सम्बद्ध रखता है, उसका खोज कर सकें | यदि आप इच्छुक हैं तो कृपया जानकारी दीजिये"

### 3. अगुवाई

... अब आरम्भ करें

- प्रत्येक व्यक्ति के लिए अध्ययन मार्गदर्शिका की कॉपी डौनलोड और प्रिंट करें
- अध्ययन मार्गदर्शिका में सुझाव दिए गए धर्मशास्त्र के चार समूहों मेसे एक को चुनें
- सहभागियों को प्रतिदिन के प्रश्नों का उतर लिखने के लिए नॉट बुक की आवश्यकता होगी |

<u>बाईबल अध्ययन समूह की अगुवाई कैसे करें</u>

**संक्षिप्त प्रार्थना के साथ आरम्भ करें**

- विषय"भरोसा"सम्बधी कहानी को पढ़ें, जिसके नीचे अध्ययन का विषय दिया गया है |
- सहभागियों को धर्मशास्त्र का पद पढने के लिए कहें |
- अध्ययन मार्गदर्शिका में दिए गए प्रतिदिन के प्रश्नों पर विचार विमर्श करें |
- शान्त रहने पर डरें नहीं ,उतर का इन्तजार करें . लक्ष्य अगुवों के उतर देने का नहीं विचार विमर्श है |

**प्रभावपूर्ण विचार के लिए सहयोगपूर्ण निर्देशन का समूह को नियमित रूप से याद दिलाना महत्वपूर्ण है |**

- जोर से बोलें ताकि सभी लोग आवाज को सुन सकें |
- उतरों का वर्णन संछिप्त में दें ,लम्बी कहानी नहीं |
- विचार विमर्श को ख्रीस्त और बाईबल केन्द्रित रखें |
- केन्द्रित रहें और विवादस्पद बातों को रोकें |

समूह को इस बात की निश्चयता दें कि प्रत्येक सहभागियों के जीवन की आत्मिक यात्रा में चाहे वे जिस भी परिस्थिति में हैं, पवित्रात्मा अपने वचन को पूरा करेगा और उनको वह शिक्षा दें ,जो उनको अपने जीवन के लिए जानना है और जीवन में प्रयोग करना है |

- सत्र के अंत में ,अगले सप्ताह के लिए निश्चित धर्मशात्र के पदों को पढने के लिए दें |

- समूह को उत्साहित करें कि अन्य लोगों को अध्ययन समूह में आने के लिए निमंत्रण दें | यह नये लोगों के लिए स्वागत योग्य वातावरण और देखभाल करने वाली समुदाय का निर्माण करता है
- संक्षिप्त प्रार्थना द्वारा सत्र को समाप्त करें |

**अध्ययन को बढ़ाने के लिए अतिरिक्त फोलोअप प्रश्न:-**

- परमेश्वर और क्या सिखाया ?
- क्या पूर्ण तरीके से अपने उतरों का वर्णन कर सकते हैं |
- क्या कोई और इन उतरों में जोड़ सकता है ?
- इस पद में सबसे अधिक आपको क्या प्रभावित करता है ?

**परिचय:**

भरोसा एक निर्णय है। यह सक्रिय है, निष्क्रिय नहीं। यह सभी परिस्थितियों में परमेश्वर के वचन की ति सदेह रहित आकारिता है। परमेश्वर ने कहा, और आपने सुना, भरोसा किया, और आपालन किया !

उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति कह सकता है, "मुझे विश्वास है कि इस भोजन में जहर नहीं है।" लेकिन यदि वह व्यक्ति इसे लेने और खाने से इनकार करता है, तो वह अपने व्यवहार से क्या दर्शा रहा हैं? यह कहना बहुत सरल है "हाँ, मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ। उसका वचन सत्य है।" लेकिन, हमेशा एक चुनाव और कुछ कार की कार्रवाई को देखा जा सकता है जो यह दर्शाती है कि एक व्यक्ति क्या वास्तव में उन बातों पर विश्वास करता है जिनका वह अंगीकार करता हैं।

वास्तविक जीवन से भरोसे के एक उदाहरण को चार्ल्स ब्लोंडिन के दर्शन में देखा गया, जो एक सिद्ध रस्सी पर चलने वाला कलाबाज़ (टाइटीप वॉकर) था। वह पानी से 160 फीट ऊपर एक चौथाई मील लंबी तानी रस्सी पर नियाग्रा फॉल्स को पार करने वाले पहले व्यक्ति थे। आंखों पर पट्टी बांधकर, एक पहिया ठेली को धकेलते और पैरबाँसा, और बांस के लट्ठे के सहारे चलते हुए झरने को पार करने के बाद, ब्लोंडिन ने पूछा कि कितनों को विश्वास है कि वह एक व्यक्ति को दूसरी ओर ले जा सकता है। भीड़ तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठी, जो ब्लोंडिन के कौशल में उनके भरोसे को दर्शाता है। फिर उसने पूछा

मी 8:5-13 में एक रोमी अधिकारी के साधारण, लेकिन गहरे, भरोसे पर यीशु के अचम्बे को लिपिबद्ध किया गया है। अधिकारी ने उसके साथ घर जाने और उसके दास को चंगा करने के यीशु के स्तावे का जवाब देते हुए कहा, "केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूँ, और सिपाही मेरे अधीन हैं। जब मैं एक से कहता हूँ, 'जा!' तो वह जाता है; और दूसरे से, 'आ!' तो वह आता है।

को

गे

यह सुनकर यीशु को अचम्भा हुआ, और जो उसके पीछे आ रहे थे उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ कि मैं ने ईएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।" तब यीशु ने सूबेदार से कहा, "जा, जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिए हो।" और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया।

जिस प्रकार रोमी सूबेदार ने यीशु के वचन पर भरोसा किया था, वैसे ही यह सुसमाचार-प्रेरित बाइबल अध्ययन आपके समूह के सदस्यों को परमेश्वर के वचन के कहे अनुसार जीने के लिए प्रेरित करेगा।

भरोसा © 2017, 2020 NBS2*GO*. सर्वाधिकार सुरक्षित। मूल रूप से *TRUST* © 2016 NBS2*GO* के रूप में अँग्रेजी में प्रकाशित। NBS2*GO* द्वारा अनुवाद और सांस्कृतिक अनुरूपण । http://www.nbs2go.com